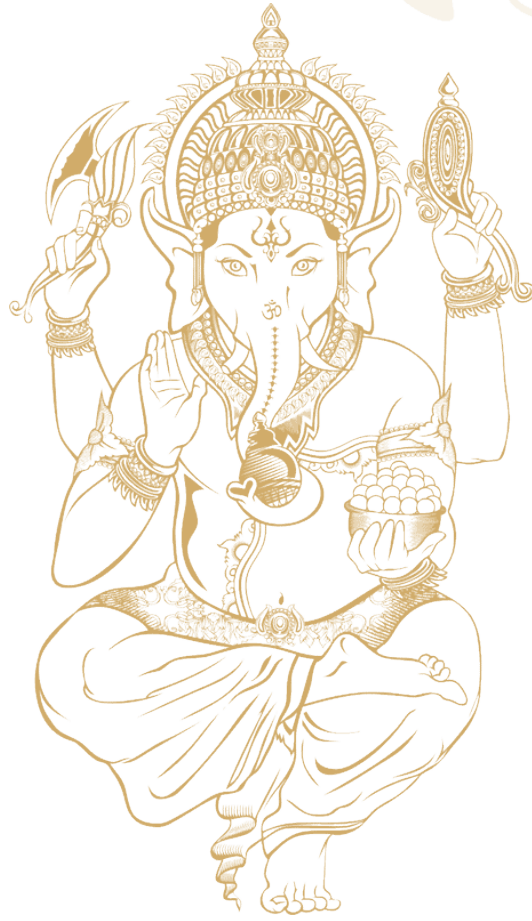




Nandni Gupta

17 Aug 2001

12:20 AM

Chhindwara

Model: Web-MyKundli

Order No: 119863001

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: स्त्रीलिंग
जन्म तिथि _____: 16-17/08/2001
दिन _____: गुरु-शुक्रवार
जन्म समय _____: 00:20:00 घंटे
इष्ट _____: 46:09:57 घटी
स्थान _____: Chhindwara
राज्य _____: Madhya Pradesh
देश _____: India

अक्षांश _____: 22:04:00 उत्तर
रेखांश _____: 78:58:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:14:08 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 00:05:52 घंटे
वेलान्तर _____: -00:04:17 घंटे
साम्पातिक काल _____: 21:46:47 घंटे
सूर्योदय _____: 05:52:01 घंटे
सूर्यास्त _____: 18:44:21 घंटे
दिनमान _____: 12:52:20 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: उत्तर
ऋतु _____: वर्षा
सूर्य के अंश _____: 00:10:54 सिंह
लग्न के अंश _____: 13:56:09 वृष

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: वृष - शुक्र
राशि-स्वामी _____: मिथुन - बुध
नक्षत्र-चरण _____: पुनर्वसु - 3
नक्षत्र स्वामी _____: गुरु
योग _____: सिद्धि
करण _____: गर
गण _____: देव
योनि _____: मार्जार
नाड़ी _____: आद्य
वर्ण _____: शूद्र
वश्य _____: मानव
वर्ग _____: मेष
युँजा _____: मध्य
हंसक _____: वायु
जन्म नामाक्षर _____: हा-हर्षा
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: रजत - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: सिंह

Astrologer Sourabh Tripathi

Astrology | Vastu | Gems Stone

+917024551008

P.sjk1008@gmail.com

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1923	श्रावण	26
पंजाबी	संवत : 2058	भाद्रपद	2
बंगाली	सन् : 1408	भाद्रपद	1
तमिल	संवत : 2058	आवनी	1
केरल	कोल्लम : 1177	चिंगम	1
नेपाली	संवत : 2058	भाद्रपद	2
चैत्रादि	संवत : 2058	भाद्रपद	कृष्ण 13
कार्तिकादि	संवत : 2058	श्रावण	कृष्ण 13

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 12
तिथि समाप्ति काल _____ : 19:02:40
जन्म तिथि _____ : 13
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : आर्द्रा
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 12:30:40 घंटे
जन्म योग _____ : पुनर्वसु
सूर्योदय कालीन योग _____ : वज्र
योग समाप्ति काल _____ : 12:57:49 घंटे
जन्म योग _____ : सिद्धि
सूर्योदय कालीन करण _____ : कौलव
करण समाप्ति काल _____ : 08:26:40 घंटे
जन्म करण _____ : गर
भयात _____ : 29:33:18
भभोग _____ : 54:23:30
भोग्य दशा काल _____ : गुरु 7 वर्ष 4 मा 7 दि

घात चक्र

मास _____ : आषाढ़
तिथि _____ : 2-7-12
दिन _____ : सोमवार
नक्षत्र _____ : स्वाति
योग _____ : परिघ
करण _____ : कौलव
प्रहर _____ : 3
वर्ग _____ : श्वान
लग्न _____ : कर्क
सूर्य _____ : मीन
चन्द्र _____ : धनु
मंगल _____ : मेष
बुध _____ : मकर
गुरु _____ : वृष
शुक्र _____ : मिथुन
शनि _____ : कुम्भ
राहु _____ : कर्क

Astrologer Sourabh Tripathi

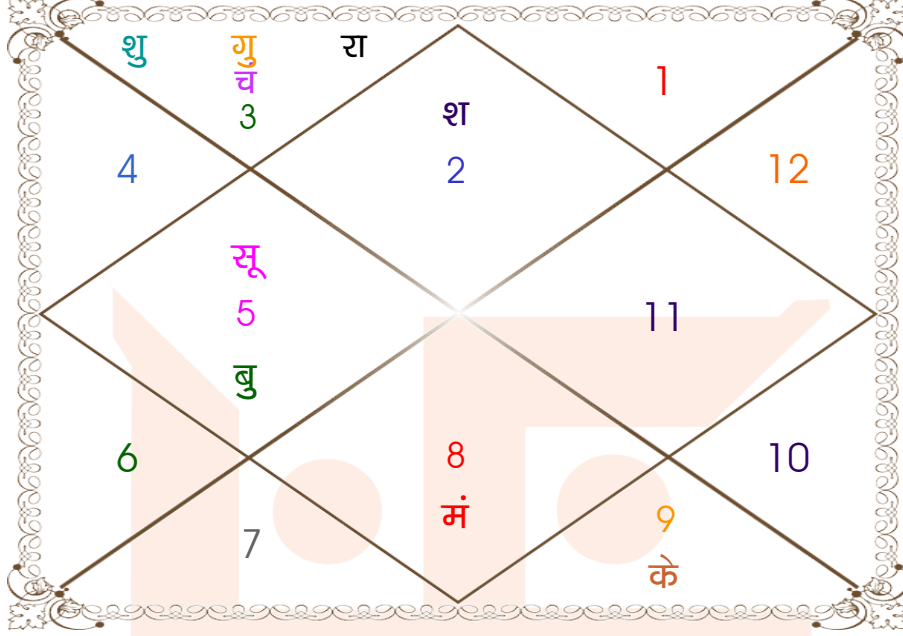
Astrology | Vastu | Gems Stone

+917024551008

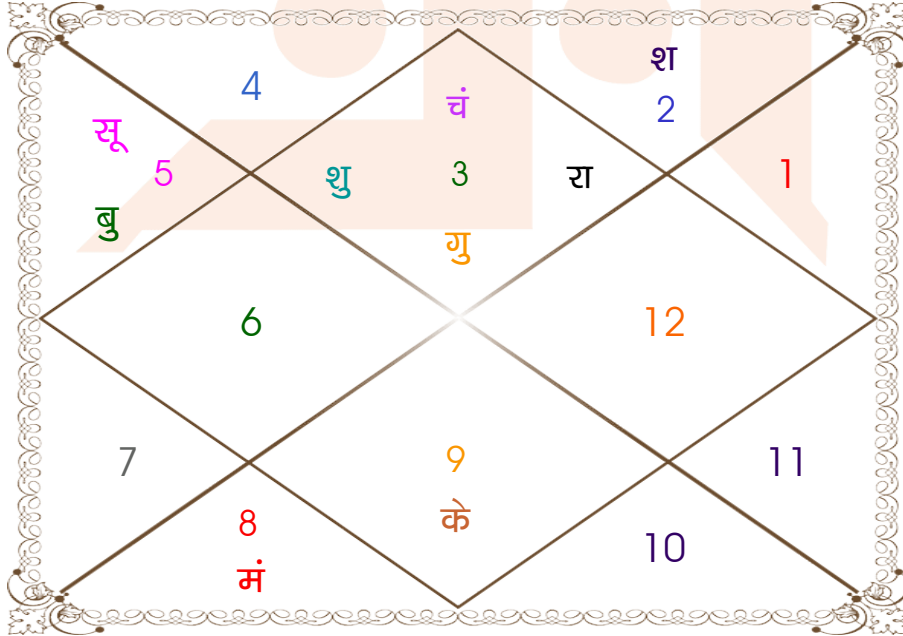
P.sjk1008@gmail.com

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



Astrologer Sourabh Tripathi

Astrology | Vastu | Gems Stone

+917024551008

P.sjk1008@gmail.com

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

		श ल	शु च गु रा
			बु सू
के	मं		

लग्न कुंडली

श ल		
रा शु गु	चं	
सू बु		के
	मं	

विंशोत्तरी
गुरु 7वर्ष 4मा 7दि
गुरु

17/08/2001

24/12/2112

गुरु	23/12/2008
शनि	24/12/2027
बुध	23/12/2044
केतु	24/12/2051
शुक्र	24/12/2071
सूर्य	24/12/2077
चन्द्र	24/12/2087
मंगल	24/12/2094
राहु	24/12/2112

योगिनी

पिंगला 0वर्ष 11मा 0दि
सिद्धा

18/07/2020

19/07/2027

सिद्धा	27/11/2021
संकटा	18/06/2023
मंगला	28/08/2023
पिंगला	17/01/2024
धान्या	17/08/2024
भामरी	28/05/2025
भद्रिका	18/05/2026
उल्का	19/07/2027

Astrologer Sourabh Tripathi

Astrology | Vastu | Gems Stone

+917024551008

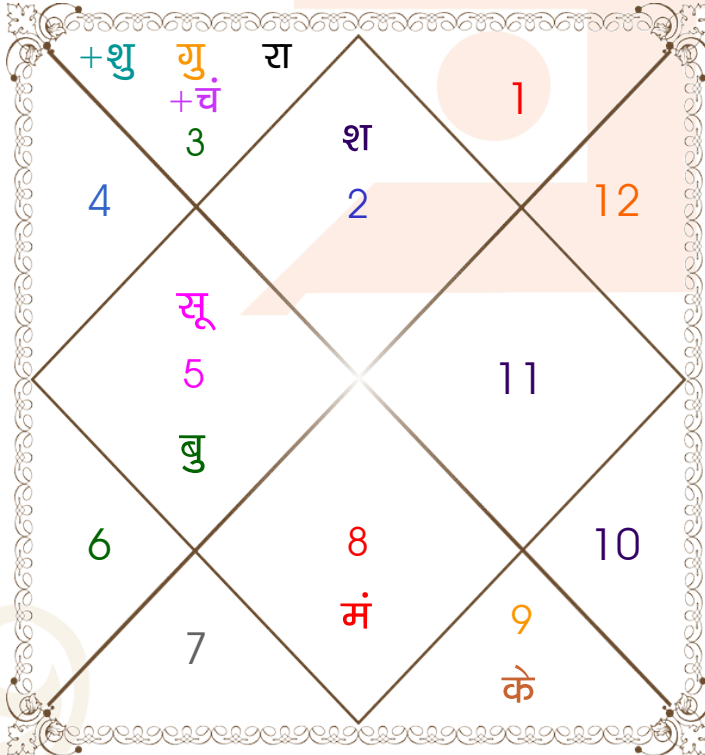
P.sjk1008@gmail.com

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

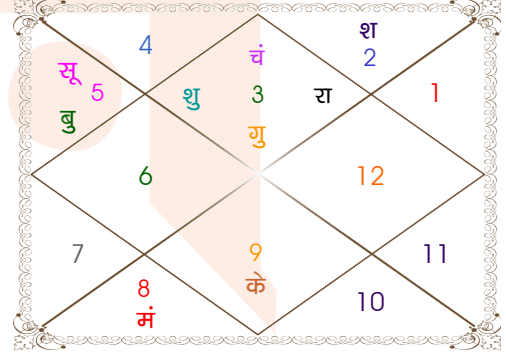
ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			वृष	13:56:09	366:25:38	रोहिणी	2	4	शुक्र	चंद्र	गुरु	---
सूर्य			सिंह	00:10:54	00:57:42	मघा	1	10	सूर्य	केतु	केतु	मूलत्रिकोण
चंद्र			मिथु	27:12:19	14:43:35	पुनर्वसु	3	7	बुध	गुरु	शुक्र	मित्र राशि
मंगल			वृश्चि	26:20:30	00:20:10	ज्येष्ठा	3	18	मंगल	बुध	गुरु	स्वराशि
बुध		अ	सिंह	11:00:59	01:49:51	मघा	4	10	सूर्य	केतु	शनि	मित्र राशि
गुरु			मिथु	13:27:39	00:11:22	आर्द्रा	3	6	बुध	राहु	बुध	शत्रु राशि
शुक्र			मिथु	23:57:12	01:10:25	पुनर्वसु	2	7	बुध	गुरु	बुध	मित्र राशि
शनि			वृष	19:42:11	00:04:10	रोहिणी	3	4	शुक्र	चंद्र	केतु	मित्र राशि
राहु	व		मिथु	11:36:54	00:01:59	आर्द्रा	2	6	बुध	राहु	शनि	उच्च राशि
केतु	व		धनु	11:36:54	00:01:59	मूल	4	19	गुरु	केतु	बुध	उच्च राशि
हर्ष	व		मक	29:02:15	00:02:24	धनिष्ठा	2	23	शनि	मंगल	शनि	---
नेप	व		मक	13:08:39	00:01:32	श्रवण	1	22	शनि	चंद्र	राहु	---
प्लूटो	व		वृश्चि	18:46:37	00:00:13	ज्येष्ठा	1	18	मंगल	बुध	केतु	---
दशम भाव			कुंभ	00:36:50	--	धनिष्ठा	--	23	शनि	मंगल	बुध	--

व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट
के.पी. अयनांश : 23:46:31

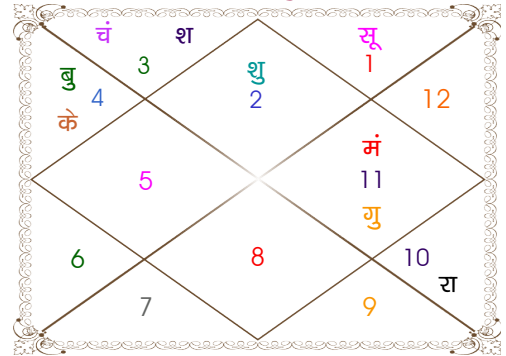
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



Astrologer Sourabh Tripathi

Astrology | Vastu | Gems Stone

+917024551008

P.sjk1008@gmail.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	मेष 26:42:56	वृष 13:56:09
2	वृष 26:42:56	मिथुन 09:29:43
3	मिथुन 22:16:30	कर्क 05:03:17
4	कर्क 17:50:03	सिंह 00:36:50
5	सिंह 17:50:03	कन्या 05:03:17
6	कन्या 22:16:30	तुला 09:29:43
7	तुला 26:42:56	वृश्चिक 13:56:09
8	वृश्चिक 26:42:56	धनु 09:29:43
9	धनु 22:16:30	मकर 05:03:17
10	मकर 17:50:03	कुम्भ 00:36:50
11	कुम्भ 17:50:03	मीन 05:03:17
12	मीन 22:16:30	मेष 09:29:43

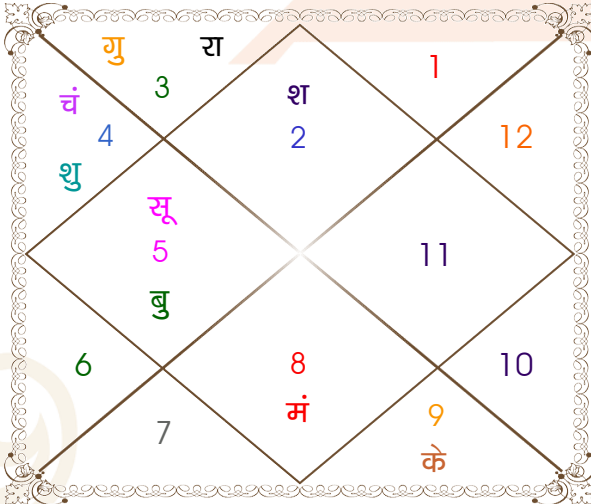
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	वृष 13:56:09	
2	मिथुन 09:22:14	
3	कर्क 03:46:21	
4	सिंह 00:36:50	
5	कन्या 02:23:40	
6	तुला 08:28:02	
7	वृश्चिक 13:56:09	
8	धनु 09:22:14	
9	मकर 03:46:21	
10	कुम्भ 00:36:50	
11	मीन 02:23:40	
12	मेष 08:28:02	

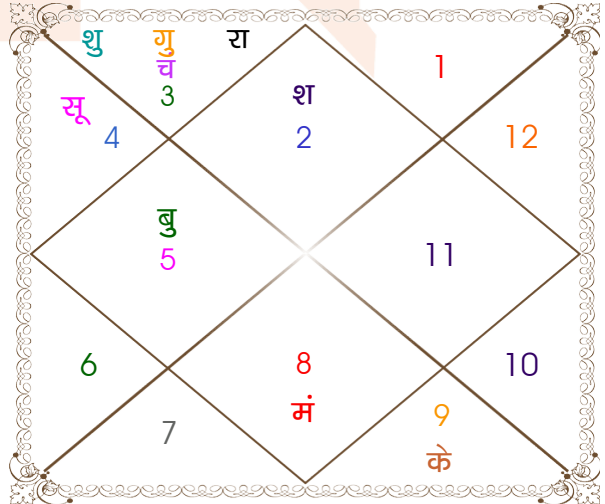
तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति
विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा
पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा

चलित कुंडली



भाव कुंडली



Astrologer Sourabh Tripathi

Astrology | Vastu | Gems Stone

+917024551008

P.sjk1008@gmail.com

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : गुरु 7 वर्ष 4 मास 7 दिन

गुरु 16 वर्ष 17/08/2001 23/12/2008	शनि 19 वर्ष 23/12/2008 24/12/2027	बुध 17 वर्ष 24/12/2027 23/12/2044	केतु 7 वर्ष 23/12/2044 24/12/2051	शुक्र 20 वर्ष 24/12/2051 24/12/2071
00/00/0000	शनि 27/12/2011	बुध 22/05/2030	केतु 22/05/2045	शुक्र 25/04/2055
00/00/0000	बुध 05/09/2014	केतु 19/05/2031	शुक्र 22/07/2046	सूर्य 24/04/2056
00/00/0000	केतु 15/10/2015	शुक्र 19/03/2034	सूर्य 27/11/2046	चंद्र 24/12/2057
17/08/2001	शुक्र 15/12/2018	सूर्य 23/01/2035	चंद्र 28/06/2047	मंगल 23/02/2059
शुक्र 07/07/2003	सूर्य 27/11/2019	चंद्र 24/06/2036	मंगल 24/11/2047	राहु 23/02/2062
सूर्य 24/04/2004	चंद्र 27/06/2021	मंगल 21/06/2037	राहु 11/12/2048	गुरु 24/10/2064
चंद्र 24/08/2005	मंगल 06/08/2022	राहु 08/01/2040	गुरु 17/11/2049	शनि 24/12/2067
मंगल 31/07/2006	राहु 12/06/2025	गुरु 15/04/2042	शनि 27/12/2050	बुध 24/10/2070
राहु 23/12/2008	गुरु 24/12/2027	शनि 23/12/2044	बुध 24/12/2051	केतु 24/12/2071

सूर्य 6 वर्ष 24/12/2071 24/12/2077	चंद्र 10 वर्ष 24/12/2077 24/12/2087	मंगल 7 वर्ष 24/12/2087 24/12/2094	राहु 18 वर्ष 24/12/2094 24/12/2112	गुरु 16 वर्ष 24/12/2112 00/00/0000
सूर्य 12/04/2072	चंद्र 24/10/2078	मंगल 21/05/2088	राहु 05/09/2097	गुरु 12/02/2115
चंद्र 11/10/2072	मंगल 25/05/2079	राहु 09/06/2089	गुरु 30/01/2100	शनि 25/08/2117
मंगल 16/02/2073	राहु 23/11/2080	गुरु 16/05/2090	शनि 07/12/2102	बुध 01/12/2119
राहु 11/01/2074	गुरु 25/03/2082	शनि 25/06/2091	बुध 25/06/2105	केतु 06/11/2120
गुरु 30/10/2074	शनि 24/10/2083	बुध 21/06/2092	केतु 14/07/2106	शुक्र 18/08/2121
शनि 12/10/2075	बुध 25/03/2085	केतु 17/11/2092	शुक्र 13/07/2109	00/00/0000
बुध 18/08/2076	केतु 24/10/2085	शुक्र 17/01/2094	सूर्य 07/06/2110	00/00/0000
केतु 23/12/2076	शुक्र 25/06/2087	सूर्य 25/05/2094	चंद्र 07/12/2111	00/00/0000
शुक्र 24/12/2077	सूर्य 24/12/2087	चंद्र 24/12/2094	मंगल 24/12/2112	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल गुरु 7 वर्ष 3 मा 20 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

Astrologer Sourabh Tripathi

Astrology | Vastu | Gems Stone

+917024551008

P.sjk1008@gmail.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - गुरु 12/06/2025 24/12/2027	बुध - बुध 24/12/2027 22/05/2030	बुध - केतु 22/05/2030 19/05/2031	बुध - शुक्र 19/05/2031 19/03/2034	बुध - सूर्य 19/03/2034 23/01/2035
गुरु 13/10/2025 शनि 09/03/2026 बुध 18/07/2026 केतु 10/09/2026 शुक्र 11/02/2027 सूर्य 29/03/2027 चंद्र 14/06/2027 मंगल 07/08/2027 राहु 24/12/2027	बुध 27/04/2028 केतु 17/06/2028 शुक्र 11/11/2028 सूर्य 25/12/2028 चंद्र 08/03/2029 मंगल 28/04/2029 राहु 07/09/2029 गुरु 03/01/2030 शनि 22/05/2030	केतु 12/06/2030 शुक्र 11/08/2030 सूर्य 29/08/2030 चंद्र 29/09/2030 मंगल 20/10/2030 राहु 13/12/2030 गुरु 30/01/2031 शनि 29/03/2031 बुध 19/05/2031	शुक्र 08/11/2031 सूर्य 29/12/2031 चंद्र 25/03/2032 मंगल 24/05/2032 राहु 26/10/2032 गुरु 13/03/2033 शनि 24/08/2033 बुध 18/01/2034 केतु 19/03/2034	सूर्य 03/04/2034 चंद्र 29/04/2034 मंगल 17/05/2034 राहु 03/07/2034 गुरु 13/08/2034 शनि 02/10/2034 बुध 15/11/2034 केतु 03/12/2034 शुक्र 23/01/2035
बुध - चंद्र 23/01/2035 24/06/2036	बुध - मंगल 24/06/2036 21/06/2037	बुध - राहु 21/06/2037 08/01/2040	बुध - गुरु 08/01/2040 15/04/2042	बुध - शनि 15/04/2042 23/12/2044
चंद्र 07/03/2035 मंगल 07/04/2035 राहु 23/06/2035 गुरु 31/08/2035 शनि 21/11/2035 बुध 03/02/2036 केतु 04/03/2036 शुक्र 29/05/2036 सूर्य 24/06/2036	मंगल 15/07/2036 राहु 07/09/2036 गुरु 26/10/2036 शनि 22/12/2036 बुध 11/02/2037 केतु 04/03/2037 शुक्र 04/05/2037 सूर्य 22/05/2037 चंद्र 21/06/2037	राहु 08/11/2037 गुरु 12/03/2038 शनि 06/08/2038 बुध 16/12/2038 केतु 09/02/2039 शुक्र 14/07/2039 सूर्य 29/08/2039 चंद्र 15/11/2039 मंगल 08/01/2040	गुरु 28/04/2040 शनि 06/09/2040 बुध 01/01/2041 केतु 18/02/2041 शुक्र 06/07/2041 सूर्य 17/08/2041 चंद्र 25/10/2041 मंगल 12/12/2041 राहु 15/04/2042	शनि 18/09/2042 बुध 04/02/2043 केतु 03/04/2043 शुक्र 13/09/2043 सूर्य 02/11/2043 चंद्र 23/01/2044 मंगल 20/03/2044 राहु 14/08/2044 गुरु 23/12/2044
केतु - केतु 23/12/2044 22/05/2045	केतु - शुक्र 22/05/2045 22/07/2046	केतु - सूर्य 22/07/2046 27/11/2046	केतु - चंद्र 27/11/2046 28/06/2047	केतु - मंगल 28/06/2047 24/11/2047
केतु 01/01/2045 शुक्र 26/01/2045 सूर्य 02/02/2045 चंद्र 15/02/2045 मंगल 24/02/2045 राहु 18/03/2045 गुरु 07/04/2045 शनि 30/04/2045 बुध 22/05/2045	शुक्र 01/08/2045 सूर्य 22/08/2045 चंद्र 26/09/2045 मंगल 21/10/2045 राहु 24/12/2045 गुरु 19/02/2046 शनि 27/04/2046 बुध 27/06/2046 केतु 22/07/2046	सूर्य 28/07/2046 चंद्र 08/08/2046 मंगल 15/08/2046 राहु 03/09/2046 गुरु 20/09/2046 शनि 11/10/2046 बुध 29/10/2046 केतु 05/11/2046 शुक्र 27/11/2046	चंद्र 14/12/2046 मंगल 27/12/2046 राहु 28/01/2047 गुरु 25/02/2047 शनि 31/03/2047 बुध 30/04/2047 केतु 12/05/2047 शुक्र 17/06/2047 सूर्य 28/06/2047	मंगल 06/07/2047 राहु 29/07/2047 गुरु 18/08/2047 शनि 10/09/2047 बुध 01/10/2047 केतु 10/10/2047 शुक्र 04/11/2047 सूर्य 11/11/2047 चंद्र 24/11/2047

Astrologer Sourabh Tripathi

Astrology | Vastu | Gems Stone

+917024551008

P.sjk1008@gmail.com

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	8
भाग्यांक	1
मित्र अंक	1, 2, 8
शत्रु अंक	3, 7, 9
शुभ वर्ष	26,35,44,53,62
शुभ दिन	शनि, बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	शनि, बुध, शुक्र
मित्र राशि	कन्या, कुम्भ
मित्र लग्न	सिंह, मकर, मीन
अनुकूल देवता	गणेश
शुभ रत्न	हीरा
शुभ उपरत्न	जरकिन, ओपल
भाग्य रत्न	नीलम
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	रजत
शुभ दिशा	दक्षिणपूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन
दान अन्न	चावल
दान द्रव्य	दूध

Astrologer Sourabh Tripathi

Astrology | Vastu | Gems Stone

+917024551008

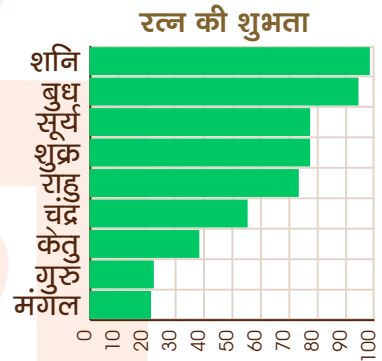
P.sjk1008@gmail.com

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
नीलम	शनि	98%	स्वास्थ्य, भाग्योदय, व्यावसायिक उन्नति
पन्ना	बुध	94%	सुख, धन, सन्तति सुख
माणिक्य	सूर्य	77%	सुख
हीरा	शुक्र	77%	धन, स्वास्थ्य, शत्रु व रोग मुक्ति
गोमेद	राहु	73%	धन, सुख
मोती	चंद्र	55%	धन, पराक्रम
लहसुनिया	केतु	38%	दुर्घटना, धन हानि
पुखराज	गुरु	22%	धन हानि, दुर्घटना, हानि
मूंगा	मंगल	21%	दाम्पत्य कष्ट, व्यय



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
गुरु	23/12/2008	83%	61%	34%	81%	47%	64%	98%	73%	38%
शनि	24/12/2027	64%	34%	0%	100%	22%	83%	100%	80%	12%
बुध	23/12/2044	83%	34%	21%	100%	22%	83%	98%	73%	38%
केतु	24/12/2051	64%	34%	34%	94%	22%	83%	86%	61%	56%
शुक्र	24/12/2071	64%	34%	21%	100%	22%	89%	100%	80%	50%
सूर्य	24/12/2077	89%	61%	34%	94%	34%	64%	86%	61%	12%
चंद्र	24/12/2087	83%	67%	21%	100%	22%	77%	98%	61%	12%
मंगल	24/12/2094	83%	61%	46%	81%	34%	77%	98%	61%	50%
राहु	24/12/2112	64%	34%	0%	94%	22%	83%	100%	86%	12%

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	17/08/2001-23/07/2002 08/01/2003-07/04/2003	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	23/07/2002-08/01/2003 07/04/2003-06/09/2004 13/01/2005-26/05/2005	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	06/09/2004-13/01/2005 26/05/2005-01/11/2006 10/01/2007-16/07/2007	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	10/09/2009-15/11/2011 16/05/2012-04/08/2012	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	24/01/2020-29/04/2022 12/07/2022-17/01/2023	-----

द्वितीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	08/08/2029-05/10/2029 17/04/2030-31/05/2032	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	31/05/2032-13/07/2034	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	13/07/2034-27/08/2036	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	22/10/2038-05/04/2039 13/07/2039-28/01/2041 06/02/2041-26/09/2041	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	06/03/2049-10/07/2049 04/12/2049-25/02/2052	-----

तृतीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	27/05/2059-11/07/2061 13/02/2062-07/03/2062	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	11/07/2061-13/02/2062 07/03/2062-24/08/2063 06/02/2064-09/05/2064	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	24/08/2063-06/02/2064 09/05/2064-13/10/2065 03/02/2066-03/07/2066	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	30/08/2068-04/11/2070	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	15/01/2079-12/04/2081 03/08/2081-07/01/2082	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	शुभ	स्वास्थ्य
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	सम	धन
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	सम	पराक्रम हानि
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	सन्तति
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	भाग्योदय

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति सप्तम भाव में है। अतः आप एक मांगलिक कन्या हैं। चूंकि आपका मांगलिक दोष भंग नहीं हो रहा है अतः इसके प्रभाव से आपके पति का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा स्वभाव से ही उनमें उग्रता रहेगी जिससे यदा कदा परस्पर संबंधों में मतभेद उत्पन्न हो सकते हैं लेकिन यह अल्प समय के लिए होंगे तथा दाम्पत्य जीवन पर इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। आप भी यदा कदा पित या गर्मी आदि से परेशानी की अनुभूति कर सकती हैं। मंगल के इस प्रभाव से आपके विवाह कार्य में विलम्ब होने की संभावना रहेगी तथा विवाह से पूर्व वार्ताओं में भी गतिरोध रहेगा लेकिन अन्त में आप को सफलता अवश्य प्राप्त होगी तथा सामान्य रूप से दाम्पत्य जीवन में प्रसन्नता बनी रहेगी।

सप्तम भावस्थ मंगल के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा पित जन्य दोषों से आपको परेशानी हो सकती है। दशम भाव पर मंगल की दृष्टि से कार्य क्षेत्र में आप परिश्रम एवं पराक्रम से इच्छित सफलता अर्जित करेंगी तथा समाज से भी न्यूनाधिक मान सम्मान की प्राप्ति होती रहेगी। लग्न पर दृष्टि के प्रभाव से स्वभाव में तेजस्विता का भाव रहेगा तथा यदा कदा मानसिक अशान्ति की भी अनुभूति हो सकती है। द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि मध्यम रहेगी तथा यदा कदा पारिवारिक जनों के मध्य मतभेद उत्पन्न होंगे जिससे परिवार की शान्ति प्रभावित होगी लेकिन इसका दुष्प्रभाव अल्प मात्रा में ही रहेगा।

अतः अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखी एवं सम्पन्न बनाने के लिए आपको किसी ऐसे मांगलिक पुरुष से विवाह करना चाहिए जिससे आपका परस्पर मांगलिक दोष भंग हो सके। इसके लिए पुरुष की कुंडली में मांगलिक भावों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि तथा राहु जैसे पापग्रहों की स्थिति होनी चाहिए। इससे आपके

सुख सौभाग्य एवं ऐश्वर्य में वृद्धि होगी तथा सुखी एवं प्रसन्नता पूर्वक आपका दाम्पत्य जीवन व्यतीत होगा। आपसी संबंधों में भी मधुरता तथा सहयोग का भाव विद्यमान रहेगा।



Astrologer Sourabh Tripathi

Astrology | Vastu | Gems Stone

+917024551008

P.sjk1008@gmail.com

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में कुलिक नामक कालसर्प योग केवल अनुदित रूप में विद्यमान है। अनुदित योग पूर्णरूप से कालसर्प योग की परिभाषा में नहीं आता, लेकिन फिर भी इसका कुछ फल अवश्य मिलता है। इस योग के कारण जातक के खर्च सामान्य से कुछ अधिक रहता है। जिससे आर्थिक क्लेश समय-समय पर होता रहता है। सुख का थोड़ा अभाव रहता है।

इस योग के कारण जातक के जीवन में समय-समय पर संघर्ष करना पड़ता है और स्वास्थ्य में उतार चढ़ाव आती रहती है एवं स्वास्थ्य में गिरावट के कारण जातक अपने भविष्य (वृद्धावस्था) को लेकर चिन्तित रहता है। जातक का वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी कभी कभी अशान्त हो जाता है। मित्रगण समय पर थोड़ा बहुत धोखा देते हैं और जातक को अपने परिवार के सदस्यों से कभी मनमुटाव हो जाता है।

इस योग के कारण जातक को सन्तान सुख में थोड़ा बहुत बाधा रहती है। पुत्र होकर भी आज्ञा का प्रायः पालन नहीं करता और सन्तान प्रायः क्रूर एवं दुष्ट स्वभाव का हो जाता है। कभी-कभी भूत प्रेतों से जातक परेशान होता है। जीवन का उत्तरार्ध थोड़ा बहुत कष्टमय व्यतीत होता है एवं जातक मानसिक रूप से परेशानी महसूस करता है। लेकिन सब कुछ होने के बाद भी जातक को व्यापार में मनोवांछित सफलता प्राप्त होती है और अपने जीवन में अनेक सम्मान भी प्राप्त करता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें, अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. बहते पानी में नारियल के फल को तीन बार शुभ मुहूर्त में प्रवाहित करें।
3. बहते पानी में कोयला को शुभ मुहूर्त में तीन बार प्रवाहित करें।
4. हरिजन को मसूर की दाल तथा द्रव्य शुभ मुहूर्त में तीन बार दान करें।
5. हनुमान चलीसा का 108 बार पाठ करें।
6. शयन कक्ष में लाल रंग के पर्दे, चादर तथा तकियों का उपयोग करें।
7. कुल देवता की पूजा करें।
8. धूम्रवस्त्र, तिल, कम्बल एवं सप्तधान्य शुभ मुहूर्त में रात्रि को दान करें।
9. केतु की उपासना उसकी महादशा में अवश्य करें।
10. देवदारु, सरसों तथा लोहवान को उबाल कर एक बार स्नान करें।
11. सवा महीने जौ के दाने पक्षियों को खिलाएँ।
12. नीला रुमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन्, लोहे की अंगूठी धारण करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगैरे।



पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

आपकी कुण्डली में किसी भी प्रकार का पितृदोष विद्यमान नहीं है, अतः आपको जीवन में पितृदोष के कारण कष्ट या परेशानी नहीं होगी ।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं । यह सूर्यबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं । त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांड़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है । अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है ।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है । इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है । यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं ।

ग्रह फल

सूर्य

चतुर्थभाव में सूर्य हो तो जातक परमसुन्दर, कठोर, पितृधननाशक, चिन्तास्त, भाईयों से वैर करने वाला, गुप्तविद्या प्रिय एवं वाहन सुखहीन होता है।

सिंह राशि में रवि हो तो जातक सत्संगी पुरुषार्थी, योगाभ्यासी, वनविहारी, कोधी, गम्भीर, उत्साही, तेजस्वी एवं धैर्यशाली होता है।

आपके जन्मकाल में सूर्य की स्थिति चतुर्थ भाव में है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य सामान्य रहेगा एवं समय समय पर वे शारीरिक व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह का भाव विद्यमान रहेगा। धन वैभव से वे प्रायः युक्त रहेंगे एवं जीवन में सर्वप्रकार से आपको सहयोग प्रदान करने के लिए यत्नशील रहेंगे। आप उनसे सामान्यतया धन सम्मान एवं वाहनादि भी प्राप्त करेंगी। इसके साथ ही वे व्यापार तथा अजीविका सम्बन्धी कार्यों में भी आपकी सहायता करेंगे।

आपके मन में उनके प्रति सामान्य श्रद्धा का भाव विद्यमान रहेगा एवं इच्छानुसार यदाकदा उनकी आज्ञा का अनुपालन भी करती रहेंगी। परन्तु आपके आपसी सम्बन्ध मधुर नहीं रहेंगे एवं परस्पर कई प्रकार के मतभेद विद्यमान रहेंगे फिर भी आप अपनी ओर से उन्हें कम से कम कष्टानुभूति के लिये सतत् प्रयत्नशील रहेंगी एवं अवसरानुकूल उनकी सहायता करने के लिए भी तत्पर रहेंगी।

चन्द्र

द्वितीयभाव में चन्द्रमा हो तो जातक परदेशवासी, भोगी, सुन्दर मधुरभाषी, भाग्यवान्, सहनशील एवं शान्तिप्रिय होता है।

मिथुन राशि में चन्द्रमा हो तो जातक विद्वान्, अध्ययनशील, सुन्दर, रतिकुशल, भोगी, मर्मज्ञ, नेत्र चिकित्सक, अच्छा वक्ता एवं अच्छा अन्तर्ज्ञान वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा द्वितीय भाव में स्थित है। अतः आपके शुभ प्रभाव से उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। आपके प्रति उनकी पूर्ण वात्सल्य भावना रहेगी तथा जीवन में विद्यार्थ्यन या धन संबंधी कार्यों में आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। साथ ही उनसे आप अवसरानुकूल महत्वपूर्ण नैतिक शिक्षा भी ग्रहण करेंगी। इसके साथ ही वे आपको हार्दिक सहयोग देंगी। इस प्रकार आपके परस्पर संबंध भी अच्छे रहेंगे।

आप भी उनसे पूर्ण प्रभावित रहेंगी तथा उनके कथनानुसार ही अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करेंगी। साथ ही जीवन में उनकी सेवा तथा वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से आप उनकी सहायता करती रहेंगी। अतः परस्पर मधुर संबंध एवं विश्वास होने के कारण आप आनन्दपूर्वक जीवन में उनका स्नेह प्राप्त करती रहेंगी।

मंगल

सातवें भाव में मंगल हो तो जातक वातरोगी, राजभीरु, शीघ्रकोपी, कटुभाषी, स्त्रीदुःखी, धूर्त, मूर्ख, निर्धन, घातकी, धननाशक एवं ईर्ष्यालु होता है।

वृश्चिक राशि में मंगल हो तो जातक नीति-दक्ष, अच्छी स्मरण शक्ति ईर्ष्यालु स्वभाववाला, बहुतहठी, अभिमानी, चोरों का नेता, पातकी एवं दुराचारी होता है।

आपके जन्म समय में मंगल सप्तम भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा वे शारीरिक रूप से कष्टानुभूति भी प्राप्त करेंगे। आप उनकी प्रिय रहेंगी तथा आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा। धन धान्य से वे युक्त रहेंगे तथा जीवन में उनसे आप पूर्ण रूपेण सहयोग प्राप्त करेंगी एवं आपकी विवाह सम्पन्न कराने में भी उनका मुख्य योगदान रहेगा। साथ ही व्यापार संबंधी कार्यों एवं सुख दुःख में वे आपको अपनी ओर से पूर्ण आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करते रहेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह एवं विश्वास रहेगा एवं उनके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपका सहयोग रहेगा। साथ ही विषम परिस्थितियों में भी आप उनको आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण इसमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अस्थायी होगी तथा शीघ्र संबंध सामान्य हो जाएंगे।

बुध

चतुर्थभाव में बुध हो तो जातक पण्डित भाग्यवान् नीतिवान्, नीतिज्ञ, लेखक, विद्वान्, बन्धुप्रेमी, उदार, गतिप्रिय, आलसी, स्थूलदेही, वाहनसुखी एवं दानी होता है।

सिंह राशि में बुध हो तो जातक मिथ्याभाषी, कुकर्मि, ठग, कामुक, भ्रमणशील, अभिमानी, वक्ता, कम उम्र में विवाह, आवेशपूर्ण स्वभाव एवं सरकारी नौकर होता है।

गुरु

द्वितीयभाव में गुरु हो तो जातक मधुरभाषी, सम्पत्ति और सन्ततिवान्, सुन्दरशरीर, सदाचारी, पुण्यात्मा, सुकार्यरत, लोकमान्य, राज्यमान्य, व्यवसायी, दीर्घायु, शत्रुनाशक एवं भाग्यवान् होता है।

मिथुन राशि में गुरु हो तो जातक योग्य वक्ता, सुगठित शरीर, लम्बाकद, उदार, विद्वान्, कई भाषाओं का जानने वाला, अनायास धनप्राप्त करने वाला, लोकमान्य, लेखक एवं व्यवहार कुशल होता है।

शुक्र

द्वितीयभाव में शुक्र हो तो जातक भाग्यवान्, साहसी, समयज्ञ, मिष्टान्नभोजी, यशस्वी, लोकप्रिय, जौहरी, दीर्घजीवी, कवि, कुटुम्बयुक्त, सुखी एवं धनवान् होता है।

मिथुन राशि में शुक्र हो तो जातक कवि, साहित्यिक, चित्रकला निपुण, साहित्यिक स्रष्टा, प्रेमी, सज्जन, लोकहितैषी धनी, उदार, सम्मानित, कुशाबुद्धि, विद्वान् एवं परस्त्रियों में रुचि रखने वाला होता है।

शनि

लग्न (प्रथम) में शनि मकर, कुम्भ तथा तुला का हो तो धनाढ्य, सुखी, धन और मीन राशियों में हो तो अत्यन्त धनवान् और सम्मानित एवं अन्य राशियों का हो तो अशुभ होता है।

वृष राशि में शनि हो तो जातक असत्य भाषी, द्रव्यहीन, मूर्ख, वचनहीन, सफल, एकान्तप्रिय, छोटी-छोटी बातों के कारण चिंतित एवं संयमी होता है।

राहु

द्वितीय भाव में राहु हो तो जातक संहशील, अल्पधनवान्, कठोरभाषी, कुटुम्बहीन, अल्पसन्तति, मात्सर्ययुक्त एवं परदेशगामी होता है।

मिथुन राशि में राहु हो तो जातक- साहसी, दीर्घायु, साधु गाने वाला, योगाभ्यासी एवं बलवान् होता है।

केतु

अष्टम भाव में केतु हो तो जातक दुर्बुद्धि, स्त्रीद्वेषी, चालाक, दुष्टजनसेवी, तेजहीन, नीच, स्त्री की कुण्डली में पति के लिए अशुभ एवं अल्पायु होता है।

धनु राशि में केतु हो तो जातक चंचल, धूर्त एवं मिथ्यावादी होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- शनि
(23/12/2008 - 24/12/2027)

शनि की महादशा की अवधि 19 वर्ष है। आपकी कुण्डली में यह 23/12/2008 को आरम्भ और 24/12/2027 को समाप्त होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में शनि प्रथम भाव में स्थित है। यह एक अशुभ ग्रह है जो जातक के दिमाग में भय उत्पन्न करता है। लक्ष्य प्राप्ति में यह बाधा और विलम्ब करता है। यह जातक की परीक्षा लेता है और लक्ष्य की प्राप्ति के लिए उसे कठिन परिश्रम करने को प्रेरित कर उसके धैर्य की परीक्षा लेता है। किन्तु जातक को अन्ततः लक्ष्य की प्राप्ति होती है।

जन्मकुण्डली में प्रथम भाव में स्थित इस ग्रह की दृष्टि तृतीय, सप्तम तथा दशम भाव पर है और यह इन भावों के 'कारकत्व' पर प्रभाव डाल रहा है। प्रथम भाव, जिसमें यह स्थित है, शरीर की लम्बाई, बनावट, स्वास्थ्य, जीवन-शक्ति, व्यक्तित्व, जीवन संघर्ष, प्रतिष्ठा, सामान्य तन्दुरुस्ती, और जीवन-संरचना के प्रति विचार का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी शनि लग्न में स्थित होने के फलस्वरूप इस दशा के दौरान कोई गम्भीर बीमारी या दुर्घटना नहीं होगी। इस दशा में आपका स्वास्थ्य सामान्य रहेगा और आप अपना कार्य नियमित रूप से करेंगे।

अर्थ-सम्पत्ति :

इस दशा के दौरान शनि के कारण आपको अर्थ-सम्पत्ति में वृद्धि करने के अनेक अवसर प्राप्त होंगे। आपको धन अर्जन के अनेक अवसर मिलेंगे और इस दशा में आपके संसाधनों में वृद्धि और 'सुधार' होगा। आप आराम और विलास की वस्तुओं पर व्यय करने में सक्षम होंगे।

व्यवसाय :

व्यावसायिक स्तर पर आप सुदृढ़ होंगे और अपनी बुद्धिमत्ता तथा शिक्षा के बल पर स्वयं धनोपार्जन करेंगे। आपमें स्वनियोजित होने की संभावना है। आप उपदेशक या नेता भी हो सकते हैं। आपको पैतृक सम्पत्ति भी मिल सकती है।

पारिवारिक जीवन :

प्रथम भाव से सप्तम भाव पर शनि की दृष्टि के फलस्वरूप आपको आपके जीवनसाथी से सहयोग मिलेगा और वह आपके परिवार को सुचारु रूप से चलाने में आपकी सहायता करेंगे। आपके बच्चे आज्ञाकारी तथा सहयोगी होंगे और आपके दैनिक जीवन में आपका सहयोग करेंगे। आपको उनसे संतोष मिलेगा।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

Astrologer Sourabh Tripathi

Astrology | Vastu | Gems Stone

+917024551008

P.sjk1008@gmail.com

शिक्षा और साहित्यिक वृत्ति में वृद्धि की दृष्टि से यह दशा आपके अनुकूल होगी ।



Astrologer Sourabh Tripathi

Astrology | Vastu | Gems Stone

+917024551008

P.sjk1008@gmail.com



Astrologer Sourabh Tripathi

Astrology | Vastu | Gems Stone

+917024551008

P.sjk1008@gmail.com

महादशा :- बुध
(24/12/2027 - 23/12/2044)

बुध की महादशा 24/12/2027 को आरम्भ होगी और 17 वर्ष की होकर 23/12/2044 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में बुध चतुर्थ भाव में स्थित हैं। बुध की दृष्टि दसवें भाव पर हैं। इसके पूर्व आपकी 19 वर्ष की शनि दशा चल रही थी। इसमें आपकी यात्रा, व्यय तथा लाभ हुए होंगे। बुध की वर्तमान दशा में आपको यश, ख्याति, सम्मान, जीवन-वृत्तिमें सफलता तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप सक्रिय तथा आशावादी होंगे और आप में स्फूर्ति तथा शक्ति प्रचुर मात्रा में होगी। अत्यधिक क्रियाशीलता के कारण ज्वर, संक्रामक बीमारी, चर्मरोग तथा स्नायविक थकावट आदि मामूली बीमारियाँ हो सकती हैं। इनसे बचने के लिए सावधानी बरतें। इन सबको छोड़ कर आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

अर्थ और व्यवसाय :

आपकी आर्थिक स्थिति अत्यन्त सुदृढ़ होगी। व्यवसाय तथा व्यापार में अच्छी आय होगी। आपको अपने माता-पिता से लाभ मिलेगा। सद्वा लाभदायक रहेगा। निवेश लाभदायक सिद्ध होगा। आपको नौकरी में भी लाभ मिलेगा। जीविका तथा व्यवसाय के लिये लेखा, पत्रकारिता, ज्योतिष, शिक्षण अथवा कम्प्यूटर प्रोग्रामर के कार्य का चयन कर सकते हैं। आप बौद्धिक कार्यों के लिए अत्यन्त उपयुक्त हैं। रत्न, पुस्तक लेखन-सामग्री, कम्प्यूटर तथा हस्तनिर्मित वस्तुओं का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपोशा लोगों को इस दशा में लाभ, आय में वृद्धि तथा पदोन्नति होगी जबकि व्यवसाय-व्यापार से जुड़े लोगों को साझेदारों से लाभ, व्यापार में सफलता प्रतिष्ठा मिलेगी। कार्य के सिलसिले में यात्रा की सम्भावना है।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

बुध की वर्तमान दशा में आपको वाहन तथा जीवन का सारा सुख मिलेगा। आपको आराम तथा जमीन-जायदाद से लाभ मिलेगा आपका एक सुन्दर मकान होगा। जमीन-जायदाद के सभी मामलों के लिए यह दशा उत्तम है। आपकी शुक्र की अन्तर्दशा में छोटी तथा शनि की अन्तर्दशा में लम्बी यात्रा होगी।

शिक्षा :

आपकी शिक्षा उत्तम होगी और शिक्षा के क्षेत्र में यश और ख्याति मिलेगी। अभी परीक्षाओं तथा प्रतियोगिताओं में सफल होंगे। लेखा, वाणिज्य, साहित्य, कम्प्यूटर विज्ञान, रचनात्मक पत्रकारिता, शिक्षण तथा शैक्षिक कार्यों में आपकी रुचि हो सकती है। आप प्रतिभावान, कूटनीतिक और बहुमुखी हैं और विभिन्न विषयों में रुचि रखते हैं। आपका दिमाग बौद्धिक और विश्लेषणात्मक है और आप सभी बौद्धिक कार्यों में अच्छा करेंगे।

परिवार :

आपके बच्चों के साथ आपका सम्बन्ध उत्तम रहेगा। उन पर आपका कुछ-व्यय

होगा। उनसे आपको बहुत सुख मिलेगा। आपके जीवन साथी की जीवन-वृत्ति सफल होगी। उनकी उन्नति होगी तथा यश, ख्याति, उत्तम आमदनी और सम्मान मिलेगा। जीवन साथी के साथ आपका सम्बन्ध उत्तम रहेगा। आपकी माता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, उनके मित्र होंगे तथा जमीन-जायदाद में वृद्धि होगी जबकि आपके पिता स्फूर्तिवान होंगे कार्यों में रुचि होगी। आपके छोटे भाई-बहनों को हर प्रकार का लाभ तथा सुख मिलेगा जबकि बड़े भाई बहनों का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा उन्हें ननिहाल से लाभ और नौकरी में सफलता मिलेगी। आपका उनके साथ सम्बन्ध अत्यन्त मधुर रहेगा। बुध की इस दशा में आपको सुख और जमीन-जायदाद की प्राप्ति होगी, आप के अनेक मित्र होंगे तथा माता के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा।

अन्तर्दशा :

बुध की महादशा में बुध की अन्तर्दशा में आपकी शिक्षा उत्तम होगी और वाहन तथा सुख की प्राप्ति होगी। केतु कुछ समस्या उत्पन्न कर सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा में कुछ परिवर्तन, छोटी यात्रा तथा सम्बन्धियों से सहायता मिलेगी जबकि सूर्य की अन्तर्दशा के फलस्वरूप विरोधियों पर विजय मिलेगी और स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। चन्द्र के कारण बच्चों से सुख मिलेगा जबकि मंगल की अन्तर्दशा के फलस्वरूप सम्पत्ति और समृद्धि की प्राप्ति, यात्रा और भाग्यादेय होगा। राहु कुछ समस्याएं उत्पन्न कर सकता है। गुरु की अन्तर्दशा के फलस्वरूप, यश, ख्याति तथा कार्यों में सफलता मिलेगी। शनि की अन्तर्दशा के कारण व्यय, यात्रा और कुछ लाभ हो सकता है।

**अंतर्दशा :- बुध - बुध
(24/12/2027 - 22/05/2030)**

आपके लिए बुध की महादशा 24/12/2027 को प्रारंभ हो रही है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा बुध की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 4 मास 27 दिन होगी। आपके लिए यह 24/12/2027 को प्रारंभ होकर 22/05/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध बुद्धिमत्ता, स्मृति और वाणी का कारक है।

इस अवधि में आपको घरेलू सुख और समृद्धि प्राप्त होंगे। किस्मत साथ देगी। जीवन खुशियों से भरपूर रहेगा। शिक्षा में सफल रहेंगे। बहुत से मित्र होंगे। धनी बनेंगे। अचल संपत्ति और वाहन क्रय कर सकते हैं। कार्यक्षेत्र में सफल रहेंगे। विज्ञान, संचार-माध्यम और व्यापार में दक्ष रहेंगे।

आपके जीवनसाथी को कार्यक्षेत्र में सफलता मिलेगी। पिता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, उच्चपद प्राप्त करेंगे। माता की अध्यात्म में रुचि होगी; प्रसिद्ध होंगी। आपके भाई-बहनों के लिए धनलाभ, उत्तम शिक्षा, अध्यापन से आय, लेखन, स्पर्धियों पर विजय और उत्तम कार्यालय का संकेत है। आपकी संतान को शिक्षा में सफलता के लिए परिश्रम करना होगा। अगर वे कार्यरत हैं तो कार्यक्षेत्र में बाधाएं आ सकती हैं।

अगर आप सेवारत हैं तो आय में वृद्धि होगी। परामर्शदाताओं को साझेदारी से लाभ होगा। व्यापारी धन कमाएंगे और व्यस्त रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए हरे वस्त्र, मिश्री और कपूर दान में दें।